प्रस्तावना

यह हिन्दी साहित्य की प्रमुख [illegible] पुस्तकों की विभिन्न कक्षाओं के लिये तैयार की गयी है। इन पुस्तकों [illegible] वर्ष की अवस्था के विद्यार्थी [illegible] करते हैं। [illegible] और [illegible] होता है। [illegible] (१) [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

के द्वारा किया जा सकता है। इसकी सहायता से व्याकरण की शुष्कता बहुत कुछ दूर की जा सकती है।

पाठों के क्रम में भाषा और विषय दोनों की दृष्टि से सरलता से कठिनता की ओर विकास हुआ है। शब्दों की वर्तनी (हिज्जे) में एक-रूपता देकर शुद्ध और व्यवस्थित शब्दों के लिखने का मार्ग प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रकार, शिक्षा-विभाग द्वारा प्रकाशित नवीन-योजना के अनुसार यह 'साहित्य-प्रकाश' प्रस्तुत किया गया है। इसमें किशोर बालक-बालिकाओं की रुचि और आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए ऐसे विषयों का समावेश किया गया है जिन्हें पढ़ने से उनका ज्ञान बढ़े, उनकी रुचि परिमार्जित हो और साथ ही इसमें ऐसे पाठ ही रखे गये हैं जिनको पढ़ते समय छात्रों का मन कभी न ऊबेगा।

इस पुस्तक में उद्धृत रचनाएँ पाठ्य-ग्रन्थ के उद्देश्य से उनके रचयिताओं ने नहीं लिखी थीं। इससे इन्हें इस कार्य के अनुरूप बनाने के लिए कभी-कभी किसी रचना को घटाना, बढ़ाना या बदलना पड़ा है। ऐसा करते समय लेखक की मूल कृति का सौन्दर्य और उद्देश्य नष्ट नहीं होने दिया गया। इसके लिए उनसे क्षमा माँगी जाती है। साथ ही उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना सम्पादक का धर्म है।

आशा है यह संग्रह छात्रों को साहित्य से प्रेम उत्पन्न करने और अच्छे नागरिक बनने में कुछ सहायता अवश्य पहुँचायेगा।

सम्पा०

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१. [illegible]	[illegible]	१
२. [illegible]	[illegible]	२
३. [illegible]	[illegible]	[illegible]
४. [illegible]	[illegible]	[illegible]
५. [illegible]	[illegible]	[illegible]
६. [illegible]	[illegible]	[illegible]
७. [illegible]	[illegible]	[illegible]
८. [illegible]	[illegible]	[illegible]
९. [illegible]	[illegible]	[illegible]
१०. [illegible]	[illegible]	[illegible]
११. [illegible]	[illegible]	[illegible]
१२. [illegible]	[illegible]	[illegible]
१३. [illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

साहित्य-प्रकाश

१—अभिलाषा

[प्रयाग से बच्चों के लिए एक सुन्दर मासिक-पत्र प्रकाशित होता है। '[illegible]' उसका नाम है। उसमें भी [illegible] की बहुत अच्छी कविताएँ छपा करती हैं। उन्हीं में से यह कविता ली गयी है। इसमें भगवान से प्रार्थना की गयी है। [illegible] गयी बातों को अपने में सदा पाने की कोशिश करते हैं [illegible] उन्हें इनको अवश्य देंगे।]

हमें सुमति दो, वर संगति दो,
जिससे हम न कभी बिगड़ें;
प्रेम बड़ा दो, नेम बड़ा दो,
जिससे हम न टूटें-झगड़ें।
सच्चा मन दो, सही [illegible]
रक्खें सदा देश का [illegible]
[illegible] कर दो, [illegible]
करें धर्म-कुल का [illegible]
शुद्ध हृदय दो, हमें [illegible]
सीखें सदाचार [illegible]
हमें सिखा दो, [illegible]
उन्नति का [illegible]

[illegible]

४. द्रोणाचार्य ने राजकुमारों की परीक्षा किस प्रकार की ?
५. युधिष्ठिर ने उनके किन-किन प्रश्नों के क्या उत्तर दिये ?
६. युधिष्ठिर और दूसरे राजकुमारों के उत्तर से आचार्य क्यों अप्रसन्न हुए ?
७. अर्जुन क्यों निशाना लगा सके ?
८. वाक्य किसे कहते हैं ? इस पाठ में से कोई दस वाक्य छाँटकर लिखो।

३—फूल और काँटा

[यह कविता पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने बनायी है। वे वैसाख बदी तीज सम्वत् १६२२ में पैदा हुए। पहले कुछ दिन तक अपने जन्म-स्थान (निजामाबाद, जिला आजमगढ़) में अध्यापक रहे। बाद में आजमगढ़ जिले में ही सदर क़ानूनगो हुए। लड़कपन से ही उनकी रुचि कविता करने की ओर रही। उन्होंने बहुत से काव्य लिखे। उनमें से प्रिय-प्रवास, रस-कलश मुख्य हैं। उनकी फुटकल कविताओं के कई संग्रह छप चुके हैं, जैसे—बोल-चाल, चोखे-चौपदे, चुभते-चौपदे आदि। उपाध्यायजी गद्य भी बहुत सुन्दर लिखते हैं। ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल—ये उनकी दो प्रसिद्ध गद्य की पुस्तकें हैं। पेंशन लेने के बाद से हरिऔधजी काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक हैं। वे बहुत ही सरल और मिलनसार हैं।

इस कविता में कवि ने यह दिखलाया है कि एक ही पौधे में पैदा होने और एक ही हालत में रहने पर भी फूल और काँटा एक से नहीं होते। इसका कारण यह है कि काँटा अपने में बड़प्पन लाने की कोशिश नहीं करता।]

जिन गुलामों को बिठाते पास थे,
हैं सदा देता वही भी भी जिला ॥ ३ ॥
है स्वतंत्रता एक सबकी आँख में।
दूसरा है सोहता हर-रोम पर ॥
जिस तरह सुख की बड़ाई याद है।
यों किसी में हो बहुतपन की धमक ॥ ४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१ [illegible]
२ [illegible] —
[illegible]
३ [illegible]
४ [illegible]
५ [illegible]
६ [illegible] —
[illegible]

[illegible]

[illegible]

गुरु ने लोभ-लालच पर इतना लिखाया कि यदि लोभ को दबा दिया जाय तो मैं देवता बना दूं जाऊँगा। उनको यह ध्यान न आया कि लोभ ही जो गुरु जी को भी मानते हैं। शाह ने लालच से इसे बढ़ा कर दिया। इसलिए उनके काम में जरा भी लोभ की कहानी को छोड़ दिया, ताकि इसे याद किया जाय।

परन्तु उनका चेला गुरु की बात मानने को तैयार नहीं था। उनके कहानी से पता कि लोभ को दो तरफ से छोड़ सकते और गुरु ने कह दो कि इसके लोभ को त्याग सकता है। [illegible] [illegible] दिया। [illegible] [illegible] [illegible] गुरु को दे देगा और [illegible] [illegible] [illegible] लिए दिया था।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कड़े करें। इसकी बरदाश्त नहीं हो सकी किन्तु मालूम होता है कि अब तुम बारे [illegible] विश्राम करो [illegible] सुन्दर [illegible] में [illegible]। परन्तु यदि तुम [illegible] जाय नहीं ले जा सकते, तो हमारे बच्चा, कैसे [illegible] क्या आज है! क्यों नहीं [illegible] सोचते ?"

वह इस तरह से हुआ बेहोश होकर गिर पड़ा। जब [illegible] उसने चिल्लाने लगा। उसकी आत्मा बार बार चिल्लाती थी कि वे [illegible] पापी है। तूने यह क्या कर दिया है

[illegible] को यह [illegible] देखा कि वहीं सामने [illegible] हुआ [illegible] के [illegible] "तुम, [illegible] नहीं है? क्यों मैंने तुम्हें [illegible] और मुझे [illegible] था कि मैं [illegible] परन्तु [illegible] बच्चा को [illegible] न दिया और वह [illegible] का [illegible] दिया।

[illegible] नहीं। [illegible] दिन [illegible] था। वह नहीं [illegible] [illegible] को बुलाकर [illegible] "मैंने भी [illegible] है कि मैं [illegible] हूँ।"

[illegible] बहुत [illegible] हुआ कि तुम [illegible] है, [illegible]

पछतावा हो गया है। भोज उसी के महल में था; परन्तु उसने मुञ्ज को यह बताना उचित न समझा। इसलिए उसने उत्तर दिया, "आप धैर्य धारण कीजिये, घबराने से कुछ हो नहीं सकता। यहाँ एक महात्मा आये हुए हैं। सुना है कि वह अपनी शक्ति से मुर्दों को जिला सकते हैं। तो इसमें क्या आश्चर्य है कि भोज भी फिर से जी उठे।"

मुञ्ज ने प्रसन्नता से उछलकर कहा, "वह महात्मा कहाँ हैं? मैं अभी चलकर उनसे मिलूँगा।"

मन्त्री ने उत्तर दिया, "आप सोच में न पड़ें। वह महात्मा कल सवेरे ही यहाँ पहुँच जायँगे और महल में खड़े होकर भोज को आवाज़ देंगे तो वह मुर्दों की दुनिया से उठकर यहाँ आ जायगा।"

दूसरे दिन मन्त्री साधुओं का वेष बना और लम्बी दाढ़ी लगाकर मुञ्ज के महल में चला गया। मुञ्ज ने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और रोकर कहा, "महाराज, जैसे भी हो सके भोज को अभी जीवित कर दीजिये।"

साधु ने, जो वास्तव में स्वयं मन्त्री ही था, उत्तर दिया, "ऐ मुञ्ज, यदि तुम मुझे वचन दो कि फिर कभी भोज से शत्रुता न करोगे तो मैं उसे जीवित किये देता हूँ, नहीं तो उसको क्या आवश्यकता है? ... राज्य करो।"

घबराता हो गया हूँ। मोह उसी के कारण है; परन्तु उसने बुद्ध को यह बताना उचित न समझा। इसलिए उसने उत्तर दिया, "आप धैर्य धारण कीजिये, घबराने से कुछ हो नहीं सकता। यहाँ एक महात्मा आये हुए हैं। सुना है कि वह अपनी शक्ति से मुर्दों को जिला सकते हैं। तो इसमें क्या आश्चर्य है कि मोहन भी फिर से जी उठे।"

बुड्ढे ने प्रसन्नता से उछलकर कहा, "वह महात्मा कहाँ हैं? मैं अभी जाकर उनसे मिलूँगा।"

मन्त्री ने उत्तर दिया, "आप जोश में न आइये। वह महात्मा कल सबेरे ही यहाँ पधारेंगे और महल में रहेंगे। केवल आप को आगे रहने से वह मुर्दों की दुनिया से उठकर यहाँ आ जायगा।"

दूसरे दिन मन्त्री साधुओं का वेष धर और उसी राजा को लेकर बुड्ढे के महल में पहुँच गया। बुड्ढे ने उसे पास बैठाकर प्रणाम किया और कहा, "महाराज, जैसे बने वैसे मेरे बेटे का प्राण लौटा दीजिये।"

साधु ने, जो वास्तव में स्वयं मन्त्री ही था, उत्तर दिया, "हे वृद्ध, क्या तुम नहीं समझते कि जिस तरह मोह के वशीभूत न होने से ही जीवित रहते हैं, वैसे ही इसकी क्या आवश्यकता है? परन्तु मैं प्रयत्न करूँगा।"

अभ्यास

१. अर्थ बताओ—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

२. नीचे लिखे हुए वाक्यों के प्रयोग करो—[illegible] कर दिया, [illegible], [illegible] न [illegible] पाते।

३. [illegible] के स्थान पर [illegible] को [illegible]?

४. [illegible] ने [illegible] को [illegible]?

५. [illegible] ने [illegible] को [illegible] से [illegible]?

६. [illegible] को [illegible] पर [illegible] ने [illegible] किया?

७. [illegible]

८. [illegible] स्पष्ट करो—

(१) [illegible]।

(२) [illegible]।

(३) [illegible]?

९. निम्नलिखित [illegible] के [illegible] स्पष्ट करो—

(१) [illegible]।

(२) [illegible]।

१०. [illegible] बताओ—

(१) [illegible]।

(२) [illegible]।

(३) [illegible]।

अब तू हो मदमस्त, मेघ को तुरत दिखावै,
करि मयोद मल ज्ञान हर्ष के अश्रु बहावै ॥

ऐसा [illegible] दिया हमको जो प्यारे,
जिसे देख है [illegible], और सब [illegible] हमारे ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

बड़ों के साथ व्यवहार

(१) यदि कोई बड़ा बुलाये तो "क्या" या "हाँ" मत कहो; "जी" या "जी हाँ" कहो।

(२) लोगों को बुलाने या पत्र लिखने या उनकी चर्चा करने में उनके नाम के पहले पण्डित, बाबू, महाशय, मौलवी इत्यादि जो उचित हो अवश्य लगाना चाहिये। यदि नाम न लिया जाय, तो "पण्डितजी" या "मौलवी साहब" आदि कहना या लिखना चाहिये।

(३) अपने से बड़े की ओर जहाँ तक हो सके पीठ करके मत बैठो या पीठ करके मत चलो।

(४) अपने गुरु, पिता आदि के साथ चलना हो, तो उनसे एक-दो क़दम पीछे रहो। यदि वे पीछे हों, तो रास्ता देकर उनको आगे हो जाने दो।

(५) कोई काम साथ करना हो तो जो छोटा है, उसको पहले तैयार हो जाना चाहिये। अच्छा तो यही है कि दोनों साथ ही उद्यत हों। अपने लिए अपने से बड़े को प्रतीक्षा नहीं करानी चाहिये।

(६) अगर कोई बड़ा तुमको किसी दूर के आदमी को बुलाने के लिए कहे, तो वहीं से मत चिल्लाओ, कुछ आगे बढ़कर उसको बुला लो। अगर किसी बड़े को बुलाना हो, तो दौड़कर उनके पास चले जाओ।

(७) कथा या व्याख्यान के बीच में न उठो।

सामने पहले भोजन रखना चाहिये और यदि थालियाँ छोटी बड़ी हों, तो बड़ी थाली उनके और छोटी अपने सामने रखनी चाहिये।

साधारण व्यवहार

(१) कोई दूसरा आदमी तुमको पैसा, रुपया, मिठाई दे, तो बिना अपनी माता या अपने पिता से आज्ञा लिये मत लो।

(२) किसी को कोई चीज़ देनी हो, तो दायें हाथ से मत दो और लेनी हो, तो बायें हाथ से न लो।

(३) सभ्य समाज में डकार लेना, खखारना, नाक में उँगली डालना, जमुहाई लेना, पैर हिलाते रहना, उँगली चटकाना, दाँत से नाखून काटना, [illegible] करना, अंगड़ाई लेना, कान में उँगली या तिनका डालना इत्यादि बुरा समझा जाता है। यदि छींक आवे, तो मुँह पर हाथ रख लेना चाहिये; यदि नाक बहती हो, तो रूमाल से साफ कर लेनी चाहिये।

(४) बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका [illegible] भिन्न लोगों में [illegible] समझा जाता है। [illegible] मनुष्य से [illegible] लोगों के [illegible] जैसे हिन्दुओं के [illegible] संकेत करने से लोग [illegible] हैं कि [illegible]

रहे कि उनके मन के पहले उचित निर्णय रहे।

३. किसी शब्द के साथ जुड़े पर वैसे अन्य शब्द कहाँ देखा करिये।

४. बाल-बच्चों में मेल-जोल की शिक्षा कैसे दी जाती है?

५. इस पाठ में बतलाये हुए मेल-जोल के कितने गुण हमें पता लगते हैं?

६. इन वाक्यों के उद्देश्य और विधेय बतलाओ—

(क) सभी बालकों एक दूसरे के साथ मेल व्यवहार करते हैं।

(ख) मन के साथ एक पुस्तक है।

(ग) मोहन ने एक पुस्तक लिखी।

७—जन्मभूमि

(यह कविता पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की लिखी है। (इनका परिचय पहले दिया जा चुका है।) यह इनकी कविताओं के 'सुमन' नामक संग्रह से ली गई है। इसमें कवि ने यह दिखलाया है कि जिस देश में हमारा जन्म हुआ है उस जन्मभूमि के समान दुनिया का कोई दूसरा देश न है और न, स्वर्ग भी नहीं है। यह बिल्कुल ठीक है। इसी से हम सब को चाहिये कि अपने देश को सब से बढ़कर मानें और उसके भले-बुरे कामों में दुनिया के सामने साथ दें।)

सभी वस्तुएँ हम को प्यारी,

जन्मभूमि सम एक न प्यारी।

है स्वर्गादिक से गरुई,

सुनिये सुनिये बात हमारी ॥ १ ॥

जहाँ जनम हमने लिया,

जहाँ खेल खेला लड़कपन।

जन्म - भूमि की बलिहारी है,
यह सुरपुर से भी प्यारी है।
इसकी महिमा अति भारी है,
भूमि की इसकी बुलहारी है ॥ ८ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१. [illegible]
२. [illegible]
(क) [illegible]
(ख) [illegible]
(ग) [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]

[illegible]

[illegible]

कर लिया कि बिना उदयसिंह के मारे मैं राजा नहीं बन सकता।

उदयसिंह के माता-पिता मर चुके थे, इसलिए पन्ना नाम की एक दाई उनका लालन पोषण करती थी। उसके भी उदयसिंह ही की उम्र का एक लड़का था। वह दोनों को खूब चाहती थी। दोनों लड़के साथ ही खाते-पीते और खेलते-कूदते थे।

एक दिन रात को बनवीर तलवार लेकर अपने महल से निकला। पहले वह विक्रमादित्य के कोठे में पहुँचा। बेचारे बेखबर पलँग पर लेटे हो थे। बनवीर ने जाते ही उनकी गर्दन पर ऐसी तलवार मारी कि उनका सिर धड़ से अलग हो गया। वहाँ [illegible] [illegible] को फिर [illegible] लगा।

पन्ना इस समय दोनों लड़कों को सुलाकर बैठी-बैठी कुछ सोच रही थी। एकाएक महल में रोने की आवाज सुनकर उसे बड़ा अचरज हुआ। इतने में एक नाई वहाँ [illegible] [illegible] आया। पन्ना ने उससे [illegible] [illegible] का कारण पूछा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। वह समझ गई कि अब बनवीर विक्रमादित्य का [illegible] [illegible], अब वह उदयसिंह को भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] उदयसिंह को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]

वहाँ न रक्खा। तब वह कमलमेर के क़िले में पहुँची। वहाँ आशाशाह नाम का एक सरदार था। पन्ना के समझाने-बुझाने से इस सरदार ने उदयसिंह को अपना भतीजा बतलाकर अपने यहाँ रख लिया।

वहीं उदयसिंह बड़े हुए और तब वे चित्तौर के राना बनाये गये।

अभ्यास

१. बनवीर ने उदयसिंह को क्यों मारने का निश्चय किया?
२. पन्ना ने उदय को कैसे बचाया?
३. अपने बेटे के मारे जाने पर पन्ना क्यों नहीं रोई?
४. अर्थ बतलाओ—मन में यह बात खटकती थी, बेचारे डर के सहमे गये, उस बालक के दो टुकड़े कर दिये।
५. पन्ना की ही तरह यदि किसी दूसरे सेवक के त्याग का हाल तुम्हें मालूम हो तो लिखो।
६. नीचे लिखे उद्देश्यों के साथ उचित विधेय जोड़ो :—
   (क) एक दिन उन्होंने......।
   (ख) दोनों भाई......।
   (ग) बनवीर ने......।

६—बीरबल की खिचड़ी

[इस पाठ के लेखक रायसाहब बाबू सूरजनारायण माथुर बी० ए० हैं। आप आजकल इलाहाबाद के नार्मल स्कूल में हेडमास्टर हैं। शिक्षा-विभाग में आपकी योग्यता और चतुरता का अच्छा मान है। आपने बच्चों के लिये 'भारत के सपूत' नामक एक पुस्तक लिखी है। उसमें हमारे देश के पुराने और

कोई रात भर पानी में खड़ा रह सकता है? यदि कोई हो तो उसे लाकर दिखाओ।" बीरबल के लिए तो बादशाह का इशारा काफ़ी था। तुरन्त एक मनुष्य को ढूँढ़कर लाया और दरबार में उपस्थित कर दिया।

बादशाह ने उस आदमी से रात भर पानी के अन्दर खड़े रहने के लिए कहा और कुछ धन इनाम देने का वादा किया। अस्तु, वह आदमी [illegible] पानी में खड़े खड़े [illegible] रात भर [illegible] रहा। प्रातःकाल जब वह दरबार में पहुँचा तब बादशाह के [illegible] इनाम न देने के लिए कोई बहाना ढूँढ़ने लगे। बादशाह ने [illegible] उससे पूछा कि तुम रात भर पानी के अन्दर कैसे खड़े रहे? उसने उत्तर दिया कि सरकार, मैं [illegible] आपके महल के चिराग की रोशनी देखता रहा। यह सुनकर बादशाह ने कहा, "ओहो! तुम [illegible] चिराग की गर्मी [illegible] रहे [illegible] तुम्हें इनाम नहीं मिल सकता।"

बीरबल बादशाह के इनाम के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर दिया।

पाठ-सहायक

[illegible] .... [illegible] जाने से [illegible] था। [illegible] एक [illegible] बनवाया था [illegible] पहुँचा नहीं है। [illegible] पास ही है।

अभ्यास

१. अर्थ बताओ—[illegible]।
२. अपने बनाये वाक्यों में प्रयोग करो—[illegible], [illegible] गया हूँ।
३. सम्राट् किसे कहते हैं? सम्राट् और राजा में क्या अन्तर है? आज-कल के किसी राजा और सम्राट् का नाम बतलाओ।
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]

१०—रानी दुर्गावती

[[illegible]]

एक-एक तीर लगा। उसके कई एक योद्धाओं ने इस समय उसे क़िले में चले जाने की सलाह दी; परन्तु रानी ने कहा कि युद्ध में पीठ दिखाना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। वह वहीं डटी रही। अन्त में जब उसने देखा कि अब विजय की आशा करना व्यर्थ है, तब हाथी हाँकने का अंकुश लेकर अपने पेट में मार लिया और प्राण छोड़ दिये! इस समय उसके पास छः वीर रह गये थे, जो अपनी जान हथेली पर रखकर बादशाही सेना पर टूट पड़े और अनेक शत्रुओं को मारते हुए स्वर्ग को सिधारे।

दुर्गावती के मारे जाने पर आसफ़ ख़ाँ ने क़िले को चारों ओर से घेर लिया। बालक वीरनारायण दो महीने तक बड़ी वीरता के साथ क़िले की रक्षा करता रहा। अन्त में मारा गया। उसके मरते ही बचे खुचे राजपूत मरने का विचार करके क़िले से बाहर निकल आये और बादशाही फ़ौज से भिड़ गये। उधर क़िले में स्त्रियों ने बहुत सा सामान इकट्ठा करके उसमें आग लगा ली और बच्चों समेत उसी आग में जल मरीं। इधर एक भी राजपूत जीता न बचा। यों गढ़-मण्डला का राज अकबर के हाथ आया।

पाठ-सहायक

महोबा—यह आजकल झाँसी कमिश्नरी के हमीरपुर ज़िले में एक क़स्बा है। पुराने समय में यह प्रसिद्ध चन्देल राजाओं की राजधानी थी। आल्हा ऊदल यहीं के थे। गढ़-मण्डला—यह स्थान मध्यप्रदेश में है। तीर—एक प्रकार का हथियार, जिसे फेंककर मारा जाता है

कुम्भ का मेला लगा था। अनुमान किया जाता है कि बीस लाख यात्री इस अवसर पर त्रिवेणी में स्नान करने आये थे। हर बारहवें साल यह मेला प्रयाग में लगता है। त्रिवेणी के किनारे दो-तीन मील का मैदान है। मेले के दिनों में यह सारा मैदान गुलजार हो जाता है। इतना बड़ा मेला कदाचित् ही भारतवर्ष में कहीं अन्यत्र होता हो। यों तो कुम्भ हर बारहवें साल पड़ता है; मगर प्रयाग की भांति बारहवें साल लगता है। हरद्वार, उज्जैन और नासिक में भी यहाँ मेला लगता है।

इस मेले के अवसर पहले यात्रियों की सेवा के यात्रियों के आराम के लिये इस प्रकार का प्रबन्ध किया गया था। [illegible] यात्रियों के [illegible] जगह-जगह दुकानें [illegible] यात्रियों के आराम [illegible] के लिये [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अलग होकर भटकने लगती हैं। भूले-भटकों को स्वयं-सेवक उनके साथियों के पास पहुँचा देते थे। इस काम में इन लोगों की तत्परता देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता था। नवयुवक और बालक जिस उत्साह के साथ लोगों की सेवा करते थे, डूबते हुए लोगों की रक्षा करते थे, वह प्रशंसनीय है।

कुम्भ मेले में बहुत से लोग एक महीने तक त्रिवेणी के किनारे रहते हैं। ऐसों का विचार है कि माघ भर वहाँ रहने से बहुत पुण्य होता है। कुछ लोग वसन्त-पंचमी तक ही रहते हैं।

इस प्रकार के मेलों में जाने से भिन्न-भिन्न प्रकार के आदमी देखने में आते हैं। उनके रहन-सहन, उनकी चाल-ढाल, बोल-चाल इत्यादि बहुत सी बातें मालूम होती हैं। हमें चाहिए कि जब ऐसे मेलों में जायें तब जितनी नयी बातें दिखायी दें उन्हें ध्यानपूर्वक देखें। पुराने जमाने में [illegible] इत्यादि [illegible] थे कि लोग बड़े-बड़े बुद्धिमान [illegible] सुनें और उनसे लाभ उठावें। इसका [illegible] चाहिए।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पत्थर को पिघलाकर मोम बनानेवाली।
मुख खोलो तो मीठी बोली बोलो, प्यारे ॥१॥
रगड़ों-झगड़ों का कड़ुआपन खोनेवाली।
जी में लगी हुई काई को धोनेवाली ॥
सदा जोड़ देनेवाली जो टूटा नाता।
मीठी बोली प्यार-बीज है बोनेवाली ॥२॥
काँटों में भी सुन्दर फूल खिलानेवाली।
रखनेवाली कितने ही मुखड़ों की लाली ॥
निपट बना देनेवाली है बिगड़ी बातें।
होती है मीठी बोली की करतूत निराली ॥३॥
जी उमगानेवाली चाह बढ़ानेवाली।
दिल के पेचीदे तालों की सच्ची ताली ॥
फैलानेवाली सुगन्ध सब ओर अनूठी।
मीठी बोली है पौधे फूलों की डाली ॥४॥
बह जाता है हरों बीच रस सुन्दर सोता।
प्यारा बनता है बन बसनेवाला तोता ॥
बुझ जाती है बैर-फूट की आग धधकती।
मीठी बोली से है मन पर जादू होता ॥५॥

अभ्यास

१. अर्थ बतलाओ—कड़ुआपन, प्यार-बीज, करतूत, अनूठी।
२. अर्थ लिखो और अपने बनाये वाक्यों में प्रयोग करो—[illegible]
हारे, उलझी की ताली, मीठी बोली से है मन पर जादू होता।

३. 'पत्थर को पिघलाकर मोम बनानेवाली' और 'दिल के पेचीले तालों की सच्ची ताली' का मतलब समझाओ।
४. इस पाठ के पढ़ने से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?
५. मीठी बोली से वन में बसनेवाला तोता कैसे प्यारा बन जाता है?
६. मीठी बोली बोलने से दूसरों पर कैसा प्रभाव पड़ता है?
७. पूरी कविता याद करके सुनाओ।
८. सर्वनाम किसे कहते हैं? उसका प्रयोग कहाँ होता है?

१३—मकड़ी

[इसके लेखक पण्डित भूपनारायण दीक्षित, एम० ए०, एल० टी० हैं। आप गवर्नमेंट हाई-स्कूल, उन्नाव में अध्यापक हैं। बालकों की रुचि का आपको विशेष रूप से ज्ञान है। इसी से आपकी लिखी हुई पुस्तकों से बालकों का खूब मनबहलाव होता है। वे उनको बड़े चाव से पढ़ते हैं। इनकी भाषा चलती हुई और मुहावरेदार होती है। आपकी लिखी हुई पुस्तकों में नटखट पांडे, गधे की कहानी, कीड़े मकोड़े और गुनगो विशेष प्रसिद्ध हैं। दीक्षित जी कविता भी करते हैं।

इस पाठ में लेखक ने मकड़ी के विषय में, जिसे हम लोग रोज अपने घरों में देखा करते हैं, बहुत सी जानने योग्य बातें बतलायी हैं।]

छोटे-छोटे जीव जन्तुओं में मकड़ी भी एक बड़ा विचित्र जीव है। एक साथ मिलकर रहनेवाले जन्तुओं में मकड़ी का दर्जा सब से ऊँचा है। बुद्धि और बहादुरी में मकड़ी चींटी, बर्रे तथा मधुमक्खियों से बढ़ी चढ़ी है। मकड़ी की एकाध जाति को छोड़कर, शेष मनुष्य जाति को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती। बल्कि उलटे

मच्छड़, मक्खी, गुबरैले इत्यादि तंग करनेवाले कीड़ों को मारकर हमारी सहायता करती है। जितने प्रकार के कीड़े-मकोड़े दुनिया में हैं, उन सबसे मकड़ी की दुश्मनी है। वे मकड़ी को और मकड़ी उन्हें मारने को हरदम तैयार रहती है और खुद जब वह किसी जन्तु पर हमला करती है तब ऐसी भयानक हो जाती है कि यदि उसे आठ पैर वाला शेर कहा जाय तो अनुचित न होगा। साथ ही जब कोई ज़बर्दस्त जीव उस पर हमला करता है तब तो वह कोने में दुबकती हुई या जान लेकर भागती हुई एकदम भयातुरता की मूर्ति बन जाती है।

मकड़ियाँ बहुत क़िस्म के जाले तानती हैं और उन्हीं की सहायता से शिकार पकड़ती हैं। मकड़ी के जाले तो सबने देखे ही होंगे। वह अपनी राल से ऐसे अच्छे-अच्छे जाले बनाती है कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। जाले प्रायः गोल होते हैं और इस तरकीब से बनाये जाते हैं कि कोई हलकी वस्तु, जिसका बोझ वे सँभाल सकते हैं, उनमें पड़कर नीचे नहीं आ सकती।

कुछ जाले कोठरीनुमा होते हैं। ऐसे जाले दो दीवारों के कोनों, वृक्षों की टहनियों या छप्परों के बासों में बनते हैं। प्रत्येक जाले में तीन पर्त होते हैं—एक ऊपर, एक नीचे और एक बीच में। जो पर्त पहले दो पर्तों को परस्पर जोड़ता है वह बाहरी दीवार का काम देता है।

हैं तब अँधेरे में मकड़ी यह समझकर कि शायद कोई मक्खी आ फँसी है, चट से उस पर हमला कर देती है। इधर बर्रे अपने को भयभीत सी दिखलाती हुई बाहर को भागती है, पर मकड़ी उसका पीछा नहीं छोड़ती और उसके पीछे-पीछे सुराख़ के बाहर तक चली जाती है। यहाँ पहुँचते ही बर्रे घूमकर उसपर एकदम पिल पड़ती है और डंक मारकर उसे बेहोश कर देती है। फिर उसे अपने छत्ते में ले जाती है।

अण्डे देने की ऋतु में बर्रे इनका विशेषरूप से शिकार करती हैं, क्योंकि उस अवसरपर यदि कोई मकड़ी हाथ लग गयी तो फिर उन्हें छत्ता बनाने का परिश्रम नहीं उठाना पड़ता शिकार की हुई मकड़ी के बिल को ही वे अपना घर बना लेती हैं और उसी में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से जो बच्चे निकलते हैं, वे उसी मकड़ी को खाकर पुष्ट होकर समय पर बाहर निकल आते हैं। इस प्रकार ये बर्रे मकड़ियों का केवल शिकार ही नहीं करतीं, बल्कि उनके घरों पर भी कब्ज़ा कर लेती हैं।

मकड़ियों की संसार के सम्पूर्ण जीवों से तो शत्रुता रहती ही है इनकी आपस में भी मेल-जोल नहीं रहता यदि इनके यहाँ कोई कानून है तो यही कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस।" मान लीजिये एक मकड़ी ने बड़े परिश्रम से एक जाला तैयार किया, दूसरी मकड़ी उधर

पाठ-सहायक

भयाक्रान्ता = [illegible] । छेनीतुल्य = छेनी की तरह । स्थिति = [illegible] । चल = एक तरह का [illegible] । एकत्र = इकट्ठा होना ।

अभ्यास

१. मकड़ी मनुष्यों को क्या लाभ पहुँचाती है ? उसे ढेर क्यों कहा जा सकता है ? और मद के समय वह अपनी जान कैसे बचाती है ?
२. मकड़ी अपना शिकार कैसे पकड़ती है ?
३. मकड़ी के जाले का [illegible] जाती है ?
४. मकड़ी के दुश्मन कौन कौन से हैं ? और वह उनके साथ कैसा व्यवहार करती है ?
५. 'शिकार [illegible]' क्या समझते हो ? अपने शब्दों में [illegible]
६. [illegible]
७. नीचे लिखे [illegible]
(क) [illegible]
(ख) [illegible]
(ग) [illegible]

१४—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त-जीवनी

[illegible]

कुछ अँगरेजी, फारसी और संस्कृत से अनुवादित हैं। आप भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाती हैं। इनका एक बहुत सुन्दर जीवन-चरित्र आपने थोड़े दिन हुए लिखा है। इस लेख में हरिश्चन्द्र जी के स्वभाव का एक श्रेष्ठ अंग दिखलाया गया है।]

भारतेन्दु जी स्वभाव ही से बड़े विनोदप्रिय थे। उर्दू-भाषा में जिसे जिन्दादिली (सजीवता) कहते हैं, वह इनमें कूट-कूटकर भरी थी। अनेक प्रकार के कष्ट सहकर भी ये प्रसन्न-चित्त तथा आनन्द-मग्न रहते थे। आकृति भी ईश्वर ने वैसी ही दी थी।

साहित्याचार्य सुकवि पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने लिखा है—"दूर से लोग इनकी मधुर कविता सुन आकृष्ट होते थे और समीप आ मधुर श्यामसुन्दर घुँघराले बालवाली मञ्जुल मूर्ति देखकर बलिहारी होते थे। वार्तालाप में इनके मिष्ट भाषण, नम्रता और शिष्ट व्यवहार से वशंवद हो जाते थे।"

बाल्यकाल में ये बड़े चंचल थे। घुड़ेरों, इक्कों तथा चलती गाड़ी पर चढ़ने-कूदने का ऐसा शौक था कि प्राण की भी परवा न करते थे। पञ्चक्रोशी करते हुए एक बार 'कँदवा' * (कर्दमेश्वर) से जो दौड़े तो 'भीमचण्डी' * पहुँचकर दम लिया। गलियों में दीवारों पर

* दोनों स्थान काशी के पास प्रसिद्ध पञ्चक्रोशी सड़क पर हैं। दोनों में अनुमानतः पाँच मील का अन्तर होगा।

फोस्फोरस † से ऐसे चित्र बना देते थे कि रात को लोग डर जाते थे।

जगन्नाथजी की फूल-टोपी इतनी बड़ी होती थी कि उसमें एक आदमी छिप सकता था। इन्होंने एक दिन ऐसा प्रबन्ध किया कि स्वयं उस टोपी के भीतर जा छिपे। इनके छोटे भाई ने सब लोगों से कह दिया कि जगन्नाथ-जी की महिमा देखो कि उनकी फूल-टोपी आप-से-आप चलती है। देखते-देखते टोपी भी आप-से-आप चलने लगी। सब लोगों को बहुत आश्चर्य होने लगा। अन्त में भारतेन्दुजी ने टोपी उलट दी और सब पर उस चमत्कार का रहस्य खुल गया। लोग हँसने लगे।

पहली अप्रैल अँगरेज़ी में 'फूल्स-डे' (Fools day—मूर्खों का दिन) कहलाता है। दूसरों को इस दिन मूर्ख बनाने का प्रयास किया जाता है। भारतेन्दुजी ने कई वर्ष तक इस प्रकार के सफल प्रयत्न किये थे। एक बार इन्होंने बड़े धूम-धाम से विज्ञापन निकाला कि विजय-नगर के महाराज की कोठी में एक योरपीय विद्वान् आये हुए हैं, जो सूर्य और चन्द्रमा को आकाश से पृथ्वी पर उतारकर सबको दिखलावेंगे। कोठी में काशी की कौतुक-प्रेमी जनता की बड़ी भीड़ हुई। पर जब वहाँ कुछ नहीं दीख

† एक रासायनिक द्रव्य जो हवा लगते ही जल उठता है तथा उस से विशेष प्रकाश निकलता है।

पर जब उस सेवक ने द्वार खोला, तब इन्हें देखकर हँसता हुआ दौड़ा लौट आया; और उसने स्वामी से कहा कि 'बाबू साहब' हैं। फिर महाशय उठकर इनसे मिलने आये, तब इन्होंने कहा कि पहले मेरा पैसा लाओ, जो तुमने मेरे लिये भेजा था। इस प्रकार हँसी-मज़ाक के बाद भीतर गये।

भारतेन्दुजी की कुछ रचनाओं से उनके इस स्वभाव का परिचय मिलता। 'चना-जोर गरम' बातों से परिहास निराला का कुछ [illegible] है

[illegible]

नहीं किसी ने लाल बिछाये।
मोती नहीं वहाँ फैलाये॥
सागर के भी नहीं झाग हैं।
नीली चिड़ियों के न दाग़ हैं॥

पके फलों का बाग नहीं है
मणियोंवाला नाग नहीं है।
देवों का दें आँख नहीं है।
झाँक रहा जो कहीं-कहीं है
आसमान के नहीं शाल हैं।
कुछ छोटे हैं, कुछ विशाल हैं॥

अभ्यास

१. अर्थ बतलाओ—लाल, चक्फेरे, सब उसकी आँखों के तारे, चंद्रमनि।
२. निम्नलिखित पदों का अर्थ अपनी सरल भाषा में लिखो :—

'कहीं दूर है, कहीं पास है।
कुछ उज्वल है, कुछ उदास है॥'
'सदा रात में ही हँसते हैं।
लाखों में प्यारी बसते हैं॥'

३. "कुछ उज्वल है कुछ उदास है" तथा "ईश्वर ने यह लोक बनाये" से क्या समझते हो?

१६—ज्वार भाटा

[यह पाठ डाक्टर महेन्द्रलाल [illegible] की रचना है। आप मथुरा ज़िले के [illegible] के निवासी थे। डाक्टरी पास करने के बाद आप [illegible] फौज के साथ ही आपको देश और [illegible] में घूमने का मौक़ा मिला था। इसमें [illegible] चढ़ा था। आपने [illegible] में कई पुस्तकें लिखी हैं [illegible] नाम से आपने यात्रा [illegible] है।

समुद्र [illegible] करता है [illegible] है [illegible] इस [illegible] अपने पहले [illegible] को तोड़ने [illegible] रहता है। इस लेख में इस ज्वार-भाटा का [illegible] वर्णन किया गया है।

स्थल की भाँति जल में भी अनेक चमत्कार दृश्य हैं। तुम्हारे चित्त को आकर्षित करनेवाली समुद्र में ज्

सकता। तू मेरे सामने क्यों डींग हाँकता है? तेरे मुँह पर जो कुछ प्रताप है वह सब मेरी ही कृपा है। यदि मैं तुझसे विमुख हो जाऊँ तो किसी को तेरा मुँह भी दिखायी न दे। तेरा आकार ही कितना है? अधिक से अधिक २,१६० मील। तुझसे तो धरातल ही कई गुना बड़ा है। वह ८,००० मील है। तुझे लेकर धरातल क्या प्रसन्न होगा? तू आकार में तो केवल उसका चतुर्थांश ही है।"

यह सुनकर चन्द्रमा कहता है, "मैं चाहे जैसा हूँ; परन्तु हूँ तो निकट। क्या तूने नहीं सुना कि मित्र* जिसके निकट रहता है वह उसी को अधिक प्यार करता है। उस दिन धरातल पर [illegible] का एक सभा थी। उन्होंने एक यन्त्र से मेरी [illegible] का अनुमान लगाया था, और निश्चय किया था कि सूर्य [illegible],००,००० मील दूर है। मैं चाहे जैसा हूँ; परन्तु प्रति दिन धरातल को आकर्षण करना मेरा व्रत है और मैं इसे यथाशक्ति कभी न छोड़ूँगा।"

इस तरह इन दोनों को झगड़ते देख धरातल मुस-कराता है और कहता है, "क्यों वृथा तकरार करते हो? तुम दोनों ही [illegible] में [illegible] हो। सूर्य महाराज की कृपा के लिए मैं सबका उनकी परिक्रमा करता रहता हूँ।

* [illegible] है—[illegible] [illegible] है

दिन में दो बार ज्वारा-भाटा होता है। अमावास्या और पूर्णिमा को जल का उठान अधिक और अष्टमी को कम होता है। अमावस्या और पूर्णिमा को सूर्य-चन्द्र दोनों की आकर्षण-शक्तियाँ मिलकर जल खींचती हैं और अष्टमी को केवल चन्द्रमा रह जाता है।

एक साल मैं चीन देश में था। हानहाइकान नामक नगर समुद्र तट के पास ही है। वहीं मेरा निवास था। समुद्र के किनारे [illegible] होते हैं। [illegible] दिन ज्वार-भाटे का [illegible] था कि [illegible] एक [illegible] और [illegible]

[illegible]

१. [illegible] और [illegible]

२. [illegible] और [illegible]

३. [illegible]

१७—[illegible]

[illegible]

[illegible]

हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, यह बड़ा दुष्ट लड़का है, इसके किसी अपराध पर ध्यान न दीजियेगा।"

चाणक्य ने कहा, "कोई चिन्ता नहीं, यह बड़ा होनहार बालक है। इसकी पढ़ाई के लिए तुमसे जितना [illegible] दे दिया करो।"

उसकी माँ रोने लगी। बोली, "हम लोगों का [illegible] है और इसके पिता राजा का [illegible] में [illegible] हैं।"

चाणक्य ने कहा, "आपका कुछ चिन्ता न कीजिए, [illegible]"

[illegible]

अस्तु, यही बालक उसी ब्राह्मण 'चाणक्य' की सहायता से भारतकी सम्राट् 'चन्द्रगुप्त मौर्य' हुआ जो ईसा से ३२१ वर्ष पहले मगध में पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर बैठा।

पाठ-सहायक

पाटलिपुत्र—यह उस पुराने नगर का नाम है। [illegible]

[illegible]

अभ्यास

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

७. [illegible]

८. [illegible]

है। जब विपत्ति के मारे इन्होंने स्वयं इस वन का आश्रय लिया था, जिसको मर्यादा पुरुषोत्तम ने श्रेय दिया था। कहते हैं, अब भी शरद-पूर्णिमा के दिन दस से [illegible] कोई २५ हजार आदमी मनोकामना पूर्ण करनेवाले कामदनाथ की सहायता ढूँढते हैं। गिरिराज चित्रकूट ही का दूसरा नाम कामद या कामतानाथ है। इस पर्वत से अनेक जड़ी-बूटियाँ पैदा होती हैं, जिनके सेवन से कई रोग दूर हो जाते हैं।

वर्तमान समय में यहाँ की बूटियों की एक खुराक शरद-पूनो के दिन [illegible]

कहा है। वहीं पर हनुमानधारा पर्वत है, वहीं से उसका उद्गम स्थान बतलाया जाता है। कुछ दूर तक पृथ्वी के भीतर-भीतर बहने के कारण इसे गुप्त-गोदावरी भी कहते हैं। इस नदी के दर्शन के लिये मशाल जला कर भीतर से घुस कर जाना पड़ता है। यहीं गिरि नाम का एक पर्वत भी है, जिसे जटायु का आसन कहा जाता है। चित्रकूट-माहात्म्य में लिखा है—चित्रकूट पर्वत के ऊपर मे कपोत नामक तीर्थ है, जहाँ पर गौराजी ने दुर्गा देवी स्थापित की थी। उस स्थान को दुर्गा पर्वत कहते हैं। इसके ऊपर मे गृद्ध का आसन है, जिस पर जटायु नाम के गृद्धराज ने बहुत तप किया था।

चित्रकूट की परिक्रमा प्रायः चार मील की है। जिसे यात्रीगण नंगे पैरों चला करते हैं, जिनमें इन्हीं कष्ट पर चलने का आनन्द आता है। स्थान-स्थान पर अनेक मन्दिर बने हैं, जो चित्रकूट का महत्त्व और शोभा के [illegible] राजाओं के बनवाये हुए बहुत से बने हैं। इसके पास के ताल मलजन की विशेष महिमा है। [illegible] [illegible] [illegible] कहे जाते हैं। "कहीं रहे [illegible], [illegible]" [illegible] कहा है 'इस [illegible] की [illegible] भी [illegible] हुए।

चित्रकूट मे १६० मन्दिर [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] है। लिखते हैं, [illegible]

अब यहाँ की बातें यहीं रहने दें और परिक्रमा को फिर लौट चलें। कामदनाथ के मन्दिर के पश्चात् भरतमिलाप का स्थान मिलता है, जहाँ पर रामचन्द्रजी के पदचिह्न चट्टान पर अंकित बतलाये जाते हैं। मन्दाकिनी नदी के एक कूल पर एक धारा का नाम जानकी-कुण्ड है, जहाँ सीताजी स्नान किया करती थीं वहाँ की चट्टान पर भी पद-चिह्न हैं, जिन्हें सीताजी के चरण कहते हैं।

भरत-मिलाप के निकट [illegible] एक पहाड़ है, जिसे लक्ष्मण-पहाड़ी कहते हैं [illegible] एक मन्दिर बना दिया गया है [illegible] और कई स्थान [illegible]

[illegible]

१. सिंगापुर में कौनसी नदी बहती है ? और उसका नाम क्यों ऐसा पड़ा ?

२. सिंगापुर में [illegible] के सिवाय और कौन-कौन से दर्शनीय स्थान हैं ? उनमें से प्राकृतिक दृष्टि से तुम किस स्थान को सर्वश्रेष्ठ कह सकते हो ?

३. इनका अर्थ बतलाओ—मनोरमता, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

४. निम्नलिखित शब्दों से उचित विशेषण बनाओ—
सिंगापुर, रंग, [illegible], [illegible], स्थान, बाग़ और मन्दिर ।

१६—हवाई-जहाज़

[इसके लेखक [illegible] [illegible] [illegible]]

[illegible]

[illegible]

और क़ाज़ियों के रहने के स्थान भी बना दिये। बनानेवाले के नाम के अनुसार ही नये गुब्बारे का नाम 'ज़ेपलिन' पड़ा।

एक ओर लोग गुब्बारे में सुधार कर रहे थे, दूसरी ओर कुछ आदमी ऐसा हवाई-जहाज़ बनाने की धुन में थे जिसमें गुब्बारे की तरह गैस भरने की जरूरत न हो; बल्कि जो चिड़ियों के सदृश डैनों के सहारे उड़े। गुब्बारा गैस भरकर उड़ाया जाता था, इसलिए उसका आकार भी बड़ा बनाना पड़ता था। बहुत सुधार करने पर भी उसमें कई एक ऐब थे।

अठारहवीं शताब्दी के अन्त में जर्मनी के अथटाबट और अमेरिका के लिनियन्थल नामक वैज्ञानिकों ने इस तरह के हवाई-जहाज़ बनाने की कोशिश की। लिनीयन्थल को कुछ सफलता भी मिली; किन्तु एक बार हवाई-जहाज़ बिगड़ जाने के कारण वह पृथ्वी पर गिर कर मर गया। फिर इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध आविष्कारक सर हिरम-मैक्सिम ने भी चेष्टा की, कुछ सफलता भी पायी; पर विशेष लाभ न हुआ। इसी प्रकार अमेरिका के प्रोफ़ेसर लैंगले ने वहाँ की सरकार से साढ़े सात लाख रुपया लेकर हवाई जहाज़ बनाने का बीड़ा उठाया; पर बेचारे असफल रहे।

आखिरकार इस ढङ्ग के हवाई-जहाज़ बनाने में

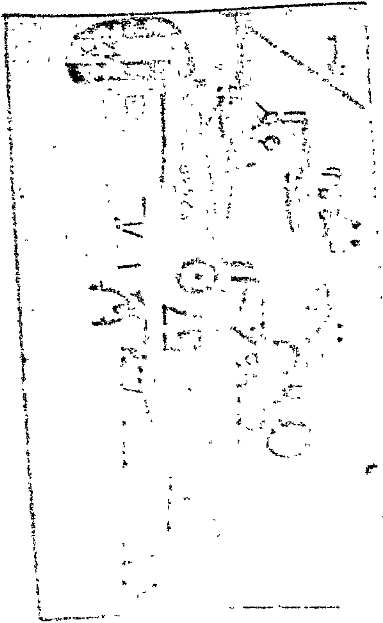

सरकार ने भी इंग्लैंड से भारत तक हवाई जहाज़ पर डाक ढोने का प्रबंध कर लिया है।

पाठ-सहायक

गुन = किसी काम के करने में मनुष्य की जो दक्षता बन जाती है उसे गुन कहते हैं। चिड़ियानुमा = चिड़िया की तरह। जिस चीज़ की आकार चिड़िया की तरह होती है उसे चिड़ियानुमा कहते हैं। इसी प्रकार के तुम्हें जो-जो शब्द मिले हों उन्हें लिखो।

अभ्यास

१. नई कहावतों और इनका प्रयोग करके वाक्यों में करो—देर, जहाज़ बनाने का बीड़ा उठाना, दुर्घटनाओं, खतरा मिलना।
२. जर्मनी, फ्रांस और इटली कहाँ हैं? इन देशों के भिन्न-भिन्न मनुष्यों ने हवाई-जहाज़ बनाने में [illegible] हैं?
३. प्राचीन काल के और आजकल के हवाई-जहाज़ों में क्या अन्तर है?
४. किस देश के हवाई-जहाज़ का नाम मशहूर है और उसका यह नाम क्यों पड़ा?
५. ज़ेपेलिन से तुम क्या [illegible] हो? [illegible]
६. ज़ेपेलिन के द्वारा [illegible] होती है [illegible] को [illegible] कहते हैं?

२०—मधु-मक्खी

[इसके लेखक [illegible] ([illegible]) के [illegible] हैं। [illegible] सन् १९२१ [illegible] [illegible] [illegible]

जब तक काम न पूरा होता,
कभी नहीं सुसताती है !
"क्या करना है मुझे !" बात यह,
अहा ! जानती है प्रत्येक ।
क्षुद्र जीव हैं ये सब तो भी,
इनमें कितना भरा विवेक ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

है। अनुराग = प्रेम। निर्माण = बनाना। विवेक = ज्ञान। उष्णदिन = गर्म दिन। सार = तत्त्व।

अभ्यास

१. अर्थ बताओ—माता, कला-कुशलता, महान।
२. अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में प्रयोग करो—सुस्ताती हैं, क्षुद्र जीव, ग्रीष्मकाल, कर्तव्य-कर्म-पथ-भ्रष्ट, कर्मवीर, अल्प-ज्ञान पूँजी में।
३. मधुमक्खियों के परिश्रमी होने का सबूत दो।
४. मधुमक्खियाँ किस प्रकार मधु इकट्ठा किया करती हैं?
५. मनुष्य की उन्नति में कौन सी वस्तु बाधा डालती है?
६. परिश्रम करना मनुष्य को किन-किन जीवों से सीखना चाहिये?
७. इस पाठ में आए हुए विशेषण छाँटो जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हों।

२१—सर गङ्गाराम

[इस पाठ के लेखक पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी, फ़िरोज़ाबाद, ज़िला आगरा के रहनेवाले हैं। आजकल हिन्दी के प्रसिद्ध गद्य लेखकों में हैं। इन दिनों वे कलकत्ते के 'विशाल भारत' नामक मासिकपत्र के सम्पादक हैं। आप साहित्य द्वारा अच्छे विषयों के प्रचार का [illegible] करते हैं और अपनी भाषा के पुराने सेवक और साहित्यिकों का सम्मान कराने का बराबर प्रयत्न किया करते हैं। आपने स्वर्गीय पण्डित सत्यनारायण कविरत्न का एक सुन्दर जीवन लिखा है और फुटकर लेख तो सैकड़ों लिखे हैं। नीचे दी हुई सर गङ्गाराम की जीवनी आपके [illegible] से ली गई है। इसके पढ़ने से यह विदित होता है कि मामूली घराने में पैदा होकर भी मनुष्य अपने उद्योग से किस तरह बड़ा आदमी बन सकता है और कैसे दूसरों का हित कर सकता है।]

ज़िला शेख़ुपुरा में हुआ था। आपके पिता लाला दौलतराम जी उस वक्त अमृतसर में कोर्ट-इन्स्पेक्टर थे। लाला दौलतरामजी वास्तव में हमारे संयुक्तप्रान्त के सहारनपुर ज़िले के रहनेवाले थे और पीछे से पंजाब में जा बसे थे। एण्ट्रेन्स पास करने के बाद सर गंगाराम टामसन-कालेज, रुड़की में दाखिल हुए और वहाँ से १८७३ ई० में इञ्जीनियरी में उत्तीर्ण होकर लाहौर में इञ्जीनियर नियत हुए। कहा जाता है कि उन्होंने उसी इञ्जीनियर से आफ़िस-चार्ज लिया था, जिसने उन्हें कुर्सी पर से उठा दिया था।

आपने बड़े परिश्रम के साथ अपना कार्य आरम्भ किया, जिससे सरकार आपकी योग्यता पर मुग्ध हो गयी, जब सन् १८७५ ई० में प्रिन्स आफ वेल्स भारत में पधारे तब पंजाब-सरकार ने लाहौर में उनके स्वागत का प्रबन्ध श्रीगंगाराम को सौंपा। सन् १९०३ के शाही दरबार के सुपरिन्टेण्डेण्ट आप ही बनाये गये थे और इसी अवसर पर आपको सी० आई० ई० की उपाधि मिली थी। सन् १९१२ ई० के शाही दरबार का प्रबंध भी आपको सौंपा गया था और इसके उपलक्ष में आपको एम० वी० ओ० की उपाधि मिली थी। इसके सिवाय लाहौर की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतों की मरम्मत का काम भी १२ वर्ष तक आपकी देख-रेख में हुआ था। लाहौर के राजकुमार-

इन्हें ज़मीन का एक टुकड़ा और दे दिया। आपने नहर में मशीन लगाकर पानी को ऊपर उठाया और इञ्जिनों के द्वारा सारी ज़मीन को पानी से तर कर दिया। बंजर ज़मीन लहलहा उठी। यह देखकर गवर्नमेंट ने इसी तरह की ज़मीन के ४७ मुरब्बे और दे दिये। इस ज़मीन को भी सर गंगाराम ने इञ्जिनों और मशीनों की मदद से जलमय तथा उपजाऊ बना दिया। बस फिर क्या था? खेती के कारण लक्ष्मी आपकी चेरी बन गयी। इस ज़मीन के आस-पास गाँव-पर-गाँव आबाद होने लगे। बिजली के कारखाने जारी होने लगे। अब आप जाकर वहाँ देखें तो छोटे-से-छोटे किसान के झोपड़े में भी बिजली की रोशनी दिखायी पड़ेगी।

जब सर गंगाराम इस तरह से मालामाल होने लगे तब उन्होंने दान-पुण्य द्वारा अपने धन का सदुपयोग करना प्रारम्भ किया।

सब से पहले आपका ध्यान विधवाओं की दुर्दशा की ओर आकर्षित हुआ और आपने उनके लिए एक सहायक सभा की स्थापना की। पंजाब में ही नहीं बंगाल, उड़ीसा, संयुक्तप्रान्त इत्यादि में भी इस सहायक सभा की शाखाएँ खुल गयी हैं। आज सर गंगाराम की दानशीलता के कारण २५, २६ हज़ार रुपया प्रति वर्ष इसी पुण्य कार्य में व्यय हो रहा है।

वे राजापुर गाँव में संवत् १५५४ में पैदा हुए थे। वे घर-छोड़कर राम के भक्त हो गये थे और जब तक जीवित रहे रामचन्द्र का गुण गाते रहे। उनकी रची हुई पुस्तकें सब की मशहूर हैं। इन पुस्तकों में रामचरित-मानस के अतिरिक्त गीतावली, कृष्ण-गीतावली, कवितावली, विनय-पत्रिका, दोहावली, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, बरवै-रामायण आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने संवत् १६८० में काशी में शरीर त्यागा था।

नीचे 'दोहावली' से कुछ चुने हुए दोहे दिये जाते हैं। इनसे मिलनेवाली शिक्षा अमूल्य है।

तुलसी मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु बचन कठोर॥ १॥
आपु-आपु कहँ सब भलो, अपने कहँ कोइ-कोइ।
तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ॥ २॥
तुलसी कबहुँ न त्यागिये, अपने कुल की रीति।
लायक ही सों कीजिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति॥ ३॥
आवत ही हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कञ्चन बरसे मेह॥ ४॥
तुलसी जो कीरति चहहिं, पर कीरति को खोय।
तिनके मुख मसि लागई, मुये न मिटिहै धोय॥ ५॥
नीच चंग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास।
ढीलि देत महि गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास॥ ६॥
नीच निचाई नहिं तजत, जो पावै सतसंग।
तुलसी चंदन बिटप बसि, विष नहिं तजत भुजंग॥ ७॥

२२—गोपाल-सखा

[इस नाटक के लेखक पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, एम० ए०, टी० हैं। आप सरयूपारी ब्राह्मण हैं। पहले आप काशी के सेंट्रल स्कूल में अध्यापक थे। आजकल कानपुर के हाई-स्कूल में हेडमास्टर हैं। शुक्ल जी 'नवयुग' नामक पत्र के सम्पादक भी थे।

यह नाटक उक्त पत्र से ही लिया गया है। भगवान् का ना शुद्ध हृदय और प्रेम से ही सम्भव हो सकता है। अपनी भी धन का अभिमान करने से वह कभी भी हम पर कृपा कर सकते। यही इस नाटक का उद्देश्य है।]

पहला दृश्य

[किसी गाँव का एक साधारण घर। कृष्ण की मूर्ति। एक हिन्दू चर्खा कात रही है। एक लड़का बैठा कुछ खेल रहा है।]

मा—(गाती है)

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ।
तुम पास आओ या हमको बुलाओ॥
व्रजचन्द, छिपिये न घन श्याम में अब।
ज्योत्स्ना दिखाओ, सुधा को बहाओ॥
पुष्पों को अपनी हँसी दान देकर।
कुछ तुम हँसो, कुछ हमें भी हँसाओ॥
चरणों के छूनों को मृदु फूल कोने।
करके सुमन को सफल मधु बनाओ॥

बालक—माँ, पढ़ने कब बिठाओगी।

का । वे आज भी पाठशाला न आवेंगे । मैं भी आज न आऊँगा । मुझे बड़ा डर लगता है ।

माँ—बेटा, डर नहीं । मैं तुझे पहुँचा आया करती और ले आया करती, पर फिर घर का काम कौन करेगा ?

रन्नो—काकी, मुझे भेज दो, भैया से कह देना । मैं गोपाल भैया के साथ पाठशाला जाऊँगी, मैं नहीं डरती ।

माँ—(हँसकर) चल पगली, तू क्या जायगी । तुझे घर पर पढ़ा दूँगी । (गोपाल से) डर बेटा गोपाल, एक दिन तो भूल ही गयी थी । जंगल में डर काहे का ? वृन्दा-वनवाले कृष्ण-कन्हैया तो जंगलों में बालकों की रक्षा किया ही करते हैं, उन्हीं को पुकारना । वे तेरी रक्षा करेंगे । आ, तुझे एक नया गाना सिखाऊँ (गाती है)

खेलो रे कन्हैया संग में हमारे ।
मथुरा के प्यारे, नन्द-दुलारे ॥ खेलो० ॥
हिय में बसो तुम, मन में रमो तुम,
दरस दिखाओ प्यारे ।
तुम बिन कौन दीन-दीनन को,
आहि गोपाल पुकारे ॥ खेलो० ॥

गोपाल—(गाता है) खेलो रे कन्हैया, संग में हमारे ।

माँ, क्या कृष्ण-कन्हैया सचमुच मेरे साथ-साथ खेलेंगे ?

है। इसे झट से जाना चाहिये। माँ ने कहा था कि कन्हैया जी से ही कुछ माँग लेना। सो मैं भूला ही जाता था। अबेर भी हो रही है।

कृष्ण—सचमुच? तुम्हारी माँ ने मुझ से माँगने को कहा था? मैं वनवासी चरवाहा भला क्या दूँगा? अच्छा, ठहरो, जाकर कुछ लाता हूँ। (जाते हैं)

गोपाल—(गाता है)

कैसो खेल रच्यो बनवारी?
छिन में छिपत छिनहिं में प्रगटत
मोहत बुद्धि हमारी॥ कैसो…
हारत आप जितावत हमको
दीनन के हितकारी॥ कैसो…

कृष्ण (एक मटकी लेकर आते हैं) लो, और क्या दें, यही दही की मटकी ले जाकर दे देना। देखो, अब गाँव तक आ गये आगे मैं न जाऊँगा।

गोपाल—थोड़ी दूर और चलो।

कृष्ण—नहीं भाई।

गोपाल—अच्छा, न चलो तो खेलो ही।

कृष्ण—नहीं भाई गोपाल, अब देर हो रही है। तुम जाओ, मैं अपने वन को लौट जाता हूँ।

[गोपाल जाता है, कृष्ण हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं और मुरली बजाते हैं]

[पटाक्षेप

भैया, मैं फिर पुकारता हूँ। (पुकारता है) भैया कन्हैया! भैया कन्हैया! आओ हम तुम खेलें।

[कोई नहीं आता। बलदेव डरते हैं, कुछ रोकर जाने लगते हैं।]

गोपाल—(फिर पुकारता है) नहीं आओगे? नहीं आओगे? मुझे गुरुदेव की दृष्टि में झूठा सिद्ध करोगे? एक बार, बस एक बार और आओ; अब मैं तुमसे कुछ न माँगूँगा।

(कुछ ठिठककर इधर उधर देखते हैं।)

[नेपथ्य से—"प्यारे गोपाल! मैं नहीं आ सकता। बलदेव [illegible] किया है, पर उनके हृदय में प्रेम नहीं है। उनके सामने प्रकट नहीं हो सकता।"]

(बलदेव और गोपाल दोनों [illegible] प्रस्थान करते हैं।)

[पटाक्षेप]

तीसरा दृश्य

[बलदेव [illegible]]

बलदेव आचार्य—गोपाल, तुम [illegible] हो? [illegible] और [illegible] की [illegible] हो।

गोपाल—नहीं गुरुदेव, [illegible]

बलदेव—अच्छा, अच्छे, अच्छे।

जयदेव—चलो, चलो, उसी भक्तप्रवर बालक गोपाल के पास जाऊँगा। उसी के सत्संग से भगवान को प्राप्त करूँगा! वह आ रहा है, वह आ रहा है, (पुकारते हैं)—गोपाल! गोपाल!!

गोपाल—(आता है) आप हैं गुरुदेव! आप कहाँ फिर रहे हैं? हम सब विद्यार्थी आपके बिना व्याकुल हैं। (चैतन्य की ओर देखकर) भैया, प्रणाम।

गुरुदेव—प्यारे गोपाल, गुरु तू है और शिष्य मैं हूँ। बता तो, प्यारे श्रीकृष्ण से तुझे किसने मिलाया?

गोपाल—गुरुदेव, मैं कुछ नहीं जानता। मेरी माता ने ही मुझे कृष्ण-प्रेम सिखाया है। चलिये, उन्हीं से पूछेंगे। चैतन्य भैया, आप भी आइये।

[पटाक्षेप]

छठा दृश्य

[गोपाल का घर। कृष्ण मूर्ति के सामने जयदेव, चैतन्य और चमेली के साथ गोपाल की माता आती है।]

माता—आचार्य, मैं बेचारी क्या जानूँ? इसी मूर्ति के सहारे मैंने भगवान् का प्रेम पाया और वही इस बालक को सिखाया। आइये, हम सब प्रार्थना करें।

(सब गाते हैं)

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ। (इत्यादि)

[पटाक्षेप

[illegible], गौरव-गाथा (चार भाग), विचित्र विज्ञान और महकते [illegible] हुए हैं। नीचे लिखा पाठ 'महकते मोती' से लिया गया है। इसमें जो कहानी दी गयी है, वह संस्कृत के 'हितोपदेश' [illegible] प्रसिद्ध पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इस कहानी [illegible] पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि अपने ऊपर भरोसा करनेवालों [illegible] धोखा देनेवाले को इसका फल बुरी तरह से भोगना पड़ता है।]

मगध देश में चम्पकवती नामक एक बहुत बड़ा वन [illegible]। उसमें हरिण और कौआ दो बहुत पुराने मित्र रहते [illegible]। एक दिन किसी शृगाल की दृष्टि उस मोटे ताज़े मृग [illegible] पड़ी, जिसे देखते ही उसके मुँह में पानी भर आया। [illegible]दड़ सोचने लगा, "अहा! किसी प्रकार इस हरिण [illegible] माँस खाने को मिले तो क्या ही अच्छा हो! अच्छा, [illegible] जायगा, पहले इससे मेल-जोल तो पैदा करूँ।" [illegible] अनन्तर गीदड़ हरिण के पास जाकर कहने लगा, [illegible] मित्र, अच्छे तो हो।" हरिण बोला, "भाई, [illegible] कौन हो और कहाँ से आये हो? आज पहल बार [illegible] तुम्हारे दर्शन हुए हैं।" गीदड़ कहने लगा, "मित्र मैं क्षुद्रबुद्धि नामक शृगाल हूँ। अब तक बिना किसी साथी [illegible] इस वन में अकेला रहता था। आज आपको पाकर मुझे भी आनन्द प्राप्त हुआ है, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। इस समय ऐसा [illegible] होता है, मानो मैं [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] आ गया हूँ। मित्र, मैं भी आपके [illegible] [illegible] में हूँ

अब पक्षी अपने आहार में से थोड़ा-थोड़ा उसे दे देते, जिससे उसके खाने-पीने का काम चल जाता था। किसी समय दीर्घवर्ण नामक एक बिलाव पक्षियों के बच्चों को खाने की इच्छा से उस वृक्ष पर आया। बिलाव को आता देख चिड़ियों के बच्चे भयभीत हो चहचहाने लगे। इस कोलाहल को सुन गिद्ध बोला, "अरे! कौन आता है?" गिद्ध को देख बिलाव घबरा गया। वह सोचने लगा, "इसके आगे से मैं भाग तो सकता नहीं। अब तो जो होगा सो देखा जायगा। लाओ पहले इसके समीप चलकर मेल पैदा करूँ।" बिलाव गिद्ध के पास जा बड़े विनम्र भाव से बोला, "महानुभाव, आपको प्रणाम करता हूँ।" इस पर गिद्ध ने पूछा, "तू कौन है?" वह कहने लगा, "महाराज, मैं दीर्घकर्ण नामक बिलाव हूँ।" बिलाव का नाम सुनते ही गिद्ध क्रोधपूर्ण स्वर में बोला, "अरे, तेरा यहाँ क्या काम! यहां से जल्दी भाग, नहीं तो अभी तेरी खबर लेता हूँ।"

गिद्ध को क्रुद्ध देख पहले तो बिलाव सिटपिटा गया; परन्तु फिर कुछ सावधान हो बोला, "महाराज, आप पहले मेरी प्रार्थना सुन लें, उसके पश्चात् यदि मुझे दण्ड-नीय समझें तो अवश्य दण्ड दें।" इस पर गिद्ध ने कहा, "अच्छा, जल्दी कह, क्या कहता है।" बिलाव कहने लगा, "महाराज, मैं यहां गङ्गा-तट पर चान्द्रायण व्रत-

जिन पक्षियों के बच्चे खाये गये, उन्हें बहुत दुःख हुआ। वे अपने बच्चे खानेवाले की खोज करने लगे। बिलाव को जब इस बात का पता लगा, तब वह चुपचाप गिद्ध के कोटर से निकलकर चलता बना। उधर पक्षियों ने गिद्ध के घर में अपने बच्चों की हड्डियां पड़ी देखीं, तो वे समझे कि इसी दुष्ट ने हमारे बच्चे खाये हैं। फिर क्या था, सब ने एकत्र हो उसपर हमला कर दिया और उसे मार डाला। इसलिए मैं कहता हूँ कि अनजान व्यक्ति से सहसा मित्रता नहीं करनी चाहिये।

कौए की बात सुन गीदड़ कहने लगा, "भाई, जिस दिन तुम्हारी और हरिण की मित्रता हुई थी उस दिन तुम भी परस्पर एक दूसरे के लिए अपरिचित ही रहे होंगे। फिर तुमने मित्रता क्यों की और अब तुम्हारी मैत्री दिनों-दिन कैसे गाढ़ी होती जाती है? मित्र, प्रथम दर्शन के समय तो सभी आपस में अपरिचित होते हैं। यदि वे परस्पर सम्बन्ध स्थापित न करें, तो एक को दूसरे के स्वभाव और गुण आदि का ज्ञान कैसे हो? फिर तो जगत् में कोई किसी के पास खड़ा भी न हो। वस्तुतः, मैं तो समझता हूँ कि जिस प्रकार हरिण मेरे मित्र हैं, उसी प्रकार तुम भी हो।" इस तरह वादविवाद के बाद तीनों ने मित्रता कर ली और वे एक ही साथ सुखपूर्वक रहने लगे।

एकादशी के दिन व्रती होने के कारण मैं ताँत के बने हुए जाल को दाँतों से नहीं छू सकता। अब रात तो तुम किसी तरह बिताओ, सवेरा होते ही मैं आकर जाल काट दूँगा।" इतना कह गीदड़ वहीं एकान्त में छिपकर बैठ गया।

सवेरा होते ही प्रति दिन की भाँति जब हरिण अपने स्थान पर न पहुँचा, तब कौए को बड़ी चिन्ता हुई। वह उसकी खोज में इधर-उधर उड़ता हुआ उस खेत में भी पहुँचा। वहाँ अपने मित्र हरिण को जाल में फँसा देख अत्यन्त दुःखी हो पूछने लगा, "क्यों भाई, गीदड़ कहाँ गया? क्या उसने जाल से मुक्त करने के लिए तुम्हारी कुछ सहायता नहीं की?" इस पर हरिण ने गीदड़ की सब बातें कह सुनायी। कौआ बोला, "भाई हमने उस नीच को मीठी-मीठी बातों में आकर उसे अपना मित्र बनाया, उसका फल भी हाथों-हाथ पाया। परन्तु खैर, अब भी कोई चिन्ता की बात नहीं। तुम हाथ पैर ढीले करके पेट फुलाकर लेट जाओ, जिससे किसान तुम्हें मरा समझ लापरवाही से खोलकर डाल देगा। उस समय जब मैं आवाज़ दूँ, तभी तुरन्त उठकर भाग जाना।"

हरिण ने वैसा ही किया। थोड़ी देर में किसान भी वहाँ आ गया। उसने मृग को मरा जान, दया लाते हुए

१. अर्थ बताओ और अपने शब्दों में इनका प्रयोग करो—[illegible] [illegible] हो गया। चिड़ियों के बच्चे [illegible] हो चहचहाने लगे। 'अहिंसा परमो धर्मः' (अर्थात् अहिंसा प्रधान धर्म है।)
२. [illegible]वाचक और [illegible]वाचक विशेषण में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

२५—हेमन्त

[इस कविता के रचनेवाले पण्डित गिरिधर शर्मा हैं। आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी, संवत् १९३८ में राजपूताने के झालरापाटन शहर में हुआ था। आप हिन्दी के अच्छे कवि हैं। इसके साथ ही वे संस्कृत और गुजराती में भी कविता करते हैं। साथ ही उर्दू, मराठी और बंगाली भाषा भी जानते हैं। आप व्याख्यान भी अच्छा देते हैं। आपने देशी शास्त्रों में [illegible] के प्रचार का विशेष प्रयत्न किया है। आपने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से कुछ ये हैं—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।]

यह हेमन्त शरद है आया;
इसने अपना रंग दिखाया।

अब दिन-मान घटा जाता है,
रात्रि-मान बढ़ता जाता है॥

स्वच्छ, मनोहर, शीतल पानी,
हिम-गिरि की छवि है न्यारी।

उनमें से कुछ खुद भी खाते,
वैद्यराज यों मज़े उड़ाते ॥
पानी कुहर जब छा जाता है,
कुछ भी नहीं दृष्टि आता है।
यद्यपि सूर्योदय हो जाता,
तदपि न शीघ्र दिनेश दिखाता ॥
सूर्योदय पहले जो न्हाते,
उष्ण सलिल कूपों में पाते।
करते नहीं मनुज जो सुस्ती,
उनकी टहल प्रकृति भी करती ॥

पाठ-सहायक

हिमकर-कर = चन्द्रमा की किरण। कुहर = जल के [illegible] का समूह जो ठंडक पाकर वायु की [illegible] है। दिनेश = [illegible]। [illegible]

अभ्यास

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]

राना ने हाडा को कहला भेजा कि हमारी अधीनता में हमारे यहाँ चित्तौर में रहा करो। हाडा ने उत्तर दिया कि बूँदी का राज्य मेरे पूर्वजों ने खड्ग के बल से जीता है। मैं किसी के अधीन नहीं। परन्तु आप बड़े हैं। कहिये तो होली-दिवाली पर आ जाया करूँ। इससे अधिक आप मुझसे आशा न रखें।

चित्तौर के राना को यह उत्तर बहुत अप्रिय लगा। उन्होंने बूँदी पर चढ़ाई कर दी। बूँदी से कुछ इधर ही एक स्थान निमोरिया नाम का है। सैन्य समेत राना ने वहाँ डेरा डाला। दूतों ने इस लड़ाई का संवाद हाडा को पहले पहुँचा दिया था। उसने चुने हुए कोई पाँच [illegible] योधा अपने साथ लिये [illegible] चुपचाप चढ़े [illegible] उनके आने का समाचार तक राना को न [illegible] पाया। हाडा ने रात के समय धरे हो [illegible] [illegible] के डेरे पर धावा मारा। इधर लोग [illegible] [illegible] हाडा के [illegible] के न [illegible] [illegible] सिपाहियों ने राना के [illegible] [illegible] [illegible] भाग गए। [illegible] [illegible] चित्तौर लौट [illegible] [illegible] दौड़ा करते हुए [illegible] [illegible] और सब लोग [illegible] [illegible] से चित्तौर [illegible]

एक मैदान में बूँदी के दुर्ग की एक मिट्टी की नकल तुरन्त ही तैयार की गयी। उतने ही फाटक, उतने ही बुर्ज उसी तरह की और वही वही सब जगहें। लड़कों का सा अनूठा खिलौना बन गया और राणाजी के धावे की राह देखने लगा।

बूँदी में जिस हाड़ा जाति के राजपूतों का राज्य था, उसी जाति के लोगों का एक टुकड़ा चित्तौर में भी था। वह राणाजी के आश्रित था, उनकी सेना का एक भाग था। कुम्भा वैरसी नाम का एक हाड़ा उसका प्रधान था। [illegible] वह अहेर करने गया था। [illegible] उसे पीठ पर ढाल धर वह चित्तौर को लौटा। [illegible] उसने दुर्ग की वह नकल बनते [illegible] कुतूहल हुआ [illegible]

[illegible]

शक्ति धन्य है ! यदि तुम जैसे वीर और तुम जैसे आत्माभिमानी राजपूत न होते तो राजपूताने में आज इतनी रियासतें देखने में न आतीं। खेल-तमाशे में भी जो अपने देश, अपनी जाति, अपनी मातृ-भूमि का अपमान और गौरव-क्षति नहीं सहन कर सकता, प्राण देकर भी जो उसकी मर्यादा की रक्षा करता है वही उसका स्वामी होने का अधिकारी भी हो सकता है।

पाठ सहायक

१—[illegible]—राजपूताने में बूँदी के समीप एक स्थान है।

[illegible] = सुनना [illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible]।

[illegible] = [illegible]

२—[illegible] है। मातृ-भूमि की रक्षा के [illegible] करते हैं [illegible] मातृ-भूमि के [illegible]

अभ्यास

[illegible]

चढ़ पहाड़ पर यही पुकारो,
मैदानों में यही उचारो।
"घृणा द्वेष सब दूर धरेंगे,
सब से हिल-मिल प्रेम करेंगे ॥"
प्रेम-फौज का साज सजाकर,
प्रेम-दुन्दुभी मधुर बजाकर।
सहमत हो, सब काम करेंगे,
भारत में आनन्द भरेंगे ॥
दिन में, निशि में, सभी समय में,
मस्तक में औ मृदुल हृदय में,
यह विचार मित्रों के भरना,
"पारस्परिक द्वेष परिहरना ॥"
द्वेष भाव में आग लगाकर,
झूठ और अन्याय भगाकर,
सब पर प्रेम-वारि डारेंगे,
भारत के दुखार्त मारेंगे ॥
जल में, थल में और पवन में,
दिग्गज में और भवन में,
ऐसा हो विचार सुन लेना,
"हम में तुम में अंतर कैसा !"
"भाई हैं, घर एक हमारा,
भाई बन कर करो गुजारा !"

अभ्यास

१. अर्थ लिखो और इनका तात्पर्य भी समझाओ—प्रेम-दुन्दुभी, प्रेम-वारि, प्रेम-राज्य और प्रेम-मंत्र।
२. शब्दार्थ लिखो—अन्याय। धारेंगे। वचन। प्रेम-मिठाई।
३. अर्थ लिखो और अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

"घृणा द्वेष सब दूर करेंगे,
सब से हिल-मिल प्रेम करेंगे॥"
"पारस्परिक द्वेष परिहरना"।
"प्रेम मंत्र जिसने मन धारा,
उसने विजय किया जग सारा॥"

४. एकता न होने से देश की क्या दशा होती है?
५. 'प्रेम के प्रभाव से संसार के प्रत्येक काम बड़ी सरलता से हो जाते हैं।' इसका प्रमाण अपनी सरल भाषा में दो।
६. हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी द्वेष का कारण लिखो।

२८—ताता का लोहे का कारखाना

[इस पाठ की लेखिका कुमारी उमा काटजू हैं। आजकल की लेखिकाओं में आप बहुत ही होनहार हैं। इन्होंने यह लेख प्रयाग से प्रकाशित 'सरस्वती' पत्रिका में छपवाया था। वहीं से यहाँ उद्धृत किया गया है।

जमशेदजी नसरवानजी ताता बम्बई के निवासी पारसी थे। पहले वह मामूली हैसियत के थे; परन्तु अपनी मेहनत और चतुराई से उन्होंने व्यापार में लाखों की सम्पत्ति पैदा की। उन्होंने बहुत से देशी चीज़ों के बनाने के कारखाने भी खोले जो पहले इस देश में मशीनों के बड़े पैमाने से नहीं बनायी जाती थीं। बिहार प्रान्त में ऐसे ही कारखानों में से एक लोहे का कारखाना है। उसी का वर्णन नीचे दिया जाता है।]

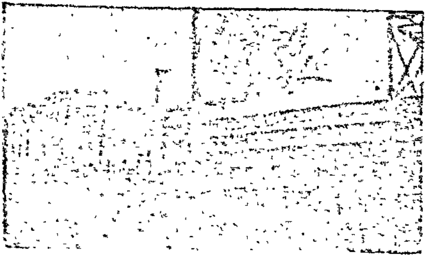

लोहे के कारखाने का एक दृश्य—जमशेदपुर

औषधालय भी है। शहर की सफ़ाई तथा स्वच्छता का भी अच्छा प्रबन्ध है।

कम्पनी ने अपने कर्मचारियों के बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा का भी बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया है। शहर के प्रत्येक भाग में एक-एक प्राथमिक पाठशाला है, जिनमें बिना किसी भेद-भाव के मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। बालकों के लिए एक हाईस्कूल तथा दो मिडिल स्कूल हैं, तथा बालिकाओं के लिए एक मिडिल, एक अपर प्राइमरी तथा कई प्राथमिक पाठशालाएँ हैं। जो कारखाने में काम करते हैं उनके लिए भी कई-एक स्कूल खुले हुए हैं। इनमें भी मुफ़्त ही शिक्षा दी जाती है।

खेल-कूद तथा मन-बहलाव के लिए भी शहर के अनेक स्थानों में मैदान हैं। यहाँ भारत के प्रायः सभी प्रान्तों के निवासी हैं। इन लोगों ने अपनी-अपनी समितियाँ खोल रखी हैं, जिनमें एक-दूसरे से मिलने-जुलने का अवसर प्राप्त होता है। कम्पनी की तरफ़ से भी क्लब खुले हुए हैं। मुसलमानों की मसजिद तथा ईदगाह, क्रिस्तानों के गिर्जे तथा सिक्खों के गुरुद्वारा हैं, पर खेद की बात है कि यहाँ हिन्दुओं की संख्या अधिक होने पर भी एक भी अच्छा मन्दिर नहीं है। हिन्दी-भाषियों की कोई सभा-समिति भी नहीं है, जहाँ एक दूसरे से मिलने का अवसर प्राप्त हो।

कारणों तथा बाधाओं से इनके जीवन-काल में इनका यह विचार कार्य-रूप में परिणत न हो सका। पर इनके सुपुत्रों (सर दोराब ताता तथा रतन ताता) ने अपने देश-भक्त पूजनीय पिता के विचारों को कार्य-रूप में परिणत कर अपनी पितृभक्ति का उत्तम परिचय दिया है। सन् १९०७ ईसवी में बम्बई में 'ताता आयरन ऐण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड' के नाम से एक कम्पनी रजिस्टर्ड हुई और सन् १९०८ ई० से यहाँ जङ्गल काटना और कारखाना बनाना आरम्भ हो गया।

यह कारखाना कई विभागों में बँटा हुआ है। 'कोक' के भट्ठों में कच्चे कोयले को जलाकर उसका 'कार्बन' निकाल देते हैं तथा धुएँ से अलकतरा तथा 'सल्फेट आफ़ एमोनिया' नामक एक प्रकार का नमक बनते हैं, जो खेतों की खाद के काम आता है। वात-भट्ठे (Blast furnace) में लोहे के पत्थर को गैस तथा कोक की आँच से गलाकर कच्चा लोहा बनाते हैं। जब यह गला हुआ कच्चा लोहा भट्ठे से निकलता है तब यहाँ का दृश्य देखने ही योग्य होता है। ऐसा मालूम होता है, मानों आग की नालियाँ बह रही हों।

इस कच्चे लोहे को बड़ी-बड़ी बाल्टियों में भरकर ईस्पात बनाने के भट्ठों में इंजन-द्वारा ले जाते हैं और वहाँ हवा के द्वारा कार्बन कम कर भट्ठे में डालते हैं। जब ईस्पात

है। बड़े-बड़े सामानों को उठाने तथा इधर-उधर ले जाने के लिए बिजली तथा 'स्टीम क्रेन' भी हैं। इस कारखाने में कतिपय भारतवासी भी अच्छे-अच्छे पदों पर हैं। कारखाने के लिये कर्मचारी शिक्षित करने के लिए यहाँ एक टेकनिकल इन्स्टिट्यूट भी है।

टीन, तारकाँटी, बिजली के तार, मालगाड़ियों के डब्बे तथा रेलवे-स्लीपर बनाने के यहाँ पृथक्-पृथक् कारखाने हैं। ये कम्पनियाँ टाटा-कम्पनी से लोहा; बिजली तथा जल लेती हैं। इनके कारखाने तथा कर्मचारियों के रहने के लिए मकान अलग हैं।

भारत के युवकों को उचित है कि इस औद्योगिक युग में कला-कौशल सीखें और मातृभूमि का मुख उज्ज्वल करें। भारतवासी प्रति वर्ष तीर्थ-यात्रा करते हैं, पर मेरा यह विचार है कि आज भारत के प्रत्येक स्त्री, पुरुष, युवा, वृद्ध तथा बालक का यह कर्तव्य है कि वह अब जमशेदपुर जैसे औद्योगिक तीर्थों का दर्शन किया करें तथा स्वयं एवं अपनी सन्तान को अपने ही औद्योगिक अनुष्ठान में भाग लेने के योग्य बनावें। इसी में भारत का कल्याण है।

शब्दार्थ

[illegible] = [illegible]। [illegible]। [illegible] अस्थिरता। अनुष्ठान = कार्य, [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible]

[इस पाठ में एक पुरानी पौराणिक कहानी को थोड़ा ही [illegible] कर दे दिया गया है।]

एक विशाल वन था। कोसों-कोस [illegible] कोस तक मनुष्य की बस्ती या मुसाफिरों के आमदरफ्त का नाम तक का पता न था। उसमें एक रमणीय तालाब [illegible] जिसमें ही हरिन रहते थे। तालाब के किनारे [illegible] का एक पेड़ था। उस पेड़ के नीचे पाताल-लोक में महादेव विराजमान थे। हरिन रोज़ तालाब में नहाते, महादेव का दर्शन करते और चरते जाते। दोपहर को [illegible] पेड़ के नीचे विश्राम करते। शाम को तालाब का पानी पीते, महादेव का दर्शन करते और सो जाते। [illegible]

[illegible]

इतनी छुट्टी चाह रहे हैं। तू आजमा तो कि हम अपने वचन का पालन करते हैं या नहीं ?"

व्याध के मन में श्रद्धा और कौतुक जाग उठा। ठीक सूर्योदय के पहले आ जाने की ताकीद करके उसने हरिणों को घर जाने दिया और खुद बिल्व के पत्तों को तोड़ता हुआ रात भर पेड़ पर जागता रहा।

ठीक सूरज उगने के समय पुनः लौट आने की प्रतिज्ञा उन्होंने की थी। अतः वे हरिण अपने घर गये, बाल बच्चों से मिले, अपने सींगों से एक दूसरे को खुजलाया, नन्हें बच्चों को प्रेम से चाटा, व्याध की कथा उन्हें कह सुनायी और विदा मांगी; "शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्" (दुष्ट के साथ दुष्टता ही करनी चाहिये) अरे दुष्ट बहेलिये को दिये वचन को पालन करना चाहिये ? अपने शरीर का तमाम बल लगा कर यहाँ से चुपचाप भाग चलें—ऐसी सलाह देनेवाला उनमें से कोई न निकला।

सगे-संबंधियों ने कहा, "चलिये, हम भी साथ चलते हैं। स्वेच्छा से मृत्यु स्वीकार करने पर मोक्ष मिलता है। आपके अपूर्व आत्म-त्याग को देखकर हम पुनीत होंगे।"

बाल बच्चे साथ हो लिये, मानों व्याध की हिंसावृत्ति की परीक्षा करने निकले हों !

सूर्योदय के पहले झुण्ड आ पहुँचा। सत्यवादी हरिण

अभ्यास

१. [illegible] ऐसे [illegible] जीवों को भी अपनी संतान के भरण-पोषण की चिन्ता होती है? इसका प्रमाण दो।
२. लड़ाई और वादा पूरे करने का क्या प्रभाव पड़ता है? कोई उदाहरण देकर समझाओ।
३. [illegible] क्या है? यह कब होती है? उसमें किस देश की [illegible] होती है? उसे यह नाम क्यों दिया?
४. दोनों में [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] कैसे [illegible] प्रकट किए?
५. इनका अर्थ बताओ—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।
६. [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] में प्रयोग करो—[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] को देखकर [illegible] [illegible]।
७. [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] शब्द लिखो।
८. [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] शब्द लिखो।
९. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] उदाहरण दो।
१०. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है? उदाहरण देकर समझाओ।

३०—[illegible]

[illegible]

[illegible]

कप्तान पहले से ही कुछ रोगी था। इस कारण वह सो चार ही पाँच दिन में इस लोक से चल बसा। उसकी मृत्यु से बड़ी हलचल मची। प्रत्येक व्यक्ति मुखिया बनकर दूसरों पर शासन करने की चेष्टा करने लगा। परन्तु दूसरे के आदेशानुसार चलना किसी को भला न लगता था। अन्त में सब लोगों ने सहमत होकर एक वृद्ध को अपना कप्तान नियत किया और उसकी आज्ञा में चलना स्वीकार किया।

कुछ दिन व्यतीत होने पर कप्तान ने देखा कि अब खाद्य-द्रव्य केवल तीन ही दिन के लिए बचा है, और इतनी अल्प सामग्री से हम सब का अधिक दिनों तक निर्वाह नहीं हो सकता। तब उसने सम्मति दी कि सबके नाम की चिट्ठियाँ डाली जायँ और प्रत्येक चौथी चिट्ठी में जिसका नाम निकले, वह समुद्र में फेंक दिया जाय। ऐसा करने से सम्भव है कि कुछ दिन तक और निर्वाह हो सके। यह बात सब ने स्वीकार की। डोंगी पर, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, कुल १९ मनुष्य थे। उनमें एक कप्तान, एक पादरी और एक बढ़ई थे, उनके

* [illegible] है कि [illegible] है। [illegible] है कि [illegible]।

हो गया, उसकी आँखों से अश्रुधारा बह चली और उसकी हिचकी बँध गयी। वह अपने हृदय को कड़ा करके बोला, "प्यारे भैया! तुम कुछ भी कहो, मैं तुम्हारा कथन नहीं मान सकता। दैव की इच्छा से मरने की चिट्ठी मेरे नाम निकली है। अपने प्राण बचाने के लिए दूसरे के प्राण लेने में बड़ा भारी पातक होता है। और फिर, तुम तो मेरे सगे भाई हो और मेरी प्राण-रक्षा के लिए इतने उतावले होकर भ्रातृ-स्नेह प्रकट कर रहे हो। यदि मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए तुमको काल के गाल में डाल दूं तो मुझ से बढ़कर पातकी इस संसार में और कौन होगा? ऐसा करने पर मेरा हृदय शोक और मोह से दुःखित होता रहेगा। अन्त में किसी दिन मुझे भी हत्यारी से आत्मघात करना पड़ेगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम कुछ चिन्ता न करो, मुझे प्राण त्याग करने दो।"

छोटे भाई की बात सुनकर बड़े भाई ने कहा, "यह सब निश्चित जान लीजिये कि मैं इसके [illegible] कभी न करने दूँगा।" इतना कहकर छोटे भाई के [illegible] पकड़कर वह फूट-फूट कर रोने लगा। वह [illegible] ने कहा, "भैया, अब तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करने दो।"

प्रात होते ही मुजंबीक* के पहाड़ की तराई की भूमि दिखलायी दी। उसे देखते ही सब की जान में जान आ गयी। उसी के समीप पुर्तगालवालों की नयी बस्ती थी। वहाँ ये शीघ्र ही पहुँच गये। उन दोनों भ्राताओं का वृत्तान्त सुनकर वहाँ के निवासीगण बहुत प्रसन्न हुए और छोटे भाई एवं उसके प्राण बचानेवालों की बड़ी प्रशंसा करने लगे।

पाठ-सहायक

गोआ—यह बम्बई सूबे में एक बन्दरगाह है। यहाँ पर आजकल भी पुर्तगाल देशवालों का अधिकार है। पुर्तगाल यूरोप में एक देश का नाम है। [illegible]

अभ्यास

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. [illegible]

५. [illegible]

६. [illegible]

* [illegible]

३. मनुष्य-जन्म किस प्रकार सार्थक हो सकता है ?
४. प्रह्लाद की हरि-भक्ति के विषय में तुम क्या जानते हो ?
५. ध्रुव कौन था ? और उसने किस प्रकार पद प्राप्त किया ?
६. देश के सुखी होने की आशा बालकों पर किस प्रकार निर्भर है ?
७. इस कविता को याद करके सुनाओ ।

३२—महर्षि दधीचि

[इस पाठ के लेखक साहित्याचार्य पण्डित चन्द्रशेखर शास्त्री हैं । ये आरा जिला (बिहार) के निवासी थे । इन्होंने संस्कृत के 'शारदा' और 'रत्नाकर' तथा हिन्दी के '[illegible]' नामक पत्रों का सम्पादन किया था । हिन्दी में इन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी थीं, इनमें वाल्मीकीय रामायण और महाभारत के अनुवाद मुख्य हैं । '[illegible]' नाम की पुस्तक में इन्होंने प्राचीन काल के भारतीय वीरों के जीवनचरित्र बहुत सरल ढंग से लिखे थे । इसी पुस्तक से यह पाठ लिया गया है ।]

महर्षि दधीचि किसी वन में रहा करते थे । वहाँ उनका सुन्दर आश्रम बना था । आश्रम के आसपास की भूमि वृक्षों और लताओं से हरी भरी थी । पास ही एक नदी थी । इस आश्रम में और भी विद्यार्थी रहा करते थे । [illegible]

कि वह कुछ सोच रहे हैं। वहाँ उस समय जो बैठे थे उनका उधर ध्यान न था, वे तर्क वितर्क में ही लीन थे। उसी समय सहसा लोगों के सामने एक वृद्ध ब्राह्मण उपस्थित हुआ। लोगों ने उसका स्वागत किया। महर्षि को प्रणाम कर वह बैठ गया। महर्षि ने तीखी नजर से उसकी ओर देखा। वह घबड़ा गया और खड़ा होकर हाथ जोड़कर बोला, "महाराज, मैं इन्द्र हूँ। मैं ब्राह्मण-वेष में आपकी सेवा में इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि मुझे आपसे कुछ माँगना है। अतएव माँगने के उपयुक्त यह रूप धारण किया है।"

महर्षि ने कहा, "इन्द्र, तुम छल के लिए प्रसिद्ध हो। तुम अपनी इस छल-प्रधान नीति के कारण इस प्रकार दुःख उठा रहे हो और तुम्हारी इस प्रवंचना का फल समस्त देवों को भोगना पड़ रहा है। पर तुमको निश्चय रूप से जान लेना चाहिये कि छल में विजयी होने की शक्ति नहीं है। तुम इतने दिनों से दैत्यराज का सामना कर रहे हो। तुम्हें इस बात का अनुभव हो जाना चाहिये था, पर [illegible] है कि यह अभी तक नहीं हुआ।"

इन्द्र ने कहा, "महाराज, यह नीति [illegible] नहीं है, यह मैं [illegible] हूँ [illegible] नीति की [illegible] में [illegible] का [illegible] है। [illegible] नीति से [illegible] हैं, [illegible] तक नहीं जा सकता।"

जिनके दुःख कोस रहे हैं। केवल स्वर्ग ही क्या: पृथ्वी की कोई से भी कोई फल नहीं निकला। इस पर लोग इधर ऐसे महादेव की शरण गये थे। उनको देवलोकों ने अपने दुःख सुनाये और उनके दूर करने में सहायता माँगी। महादेव [illegible] लोगों ने बड़ी स्तुति की। वे प्रसन्न हुए और उन्होंने मार्ग बतलाया। इसी के लिए मैं आपकी सेवा में आया हूँ।"

इतना कहकर इन्द्र चुप हो गये। महर्षि भी चुप थे। इस तरह कुछ समय बीत गया: पर इन्द्र न बोले। तब महर्षि ने कहा, "कहिये, आपको इस सम्बन्ध में मुझसे क्या कहना है? आप संकोच क्यों करते हैं? जो कुछ आप कहना चाहते हों निःसंकोच होकर कहें।"

इन्द्र ने कहा, "महाराज, मैं अपने कुछ कहने का साहस करते डरता हूँ। [illegible]

[illegible]

इन बातों को सुनकर इन्द्र हताश हो गये। वे कुछ बोल न सके। महर्षि ने पुनः कहा, "ये बातें मैं अपने स्वभाव में नहीं कह रहा हूँ। आप यह न समझिये कि इन बातों को कहकर मैं आपको निराश कर रहा हूँ; ये तो अभी अलग हैं, इनका उत्तर थोड़ी देर के बाद दूँगा, पर मैं देखता हूँ कि आप घबरा गये हैं। अतएव अब मैं योग-क्रिया के द्वारा अपना शरीर छोड़ता हूँ। आप हड्डियों को ले लीजियेगा और उनसे अपना मनोरथ सिद्ध कीजियेगा।"

महर्षि ने ऐसा ही किया और इसी तरह त्याग के कारण महर्षि दधीचि आज तक अमर हैं :

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१. [illegible]

२. [illegible]

सब हमें जानते हैं सदा भारतीय हम हैं अभय।
फिर एक बार हे विश्व, तुम गाओ भारत की विजय॥

साक्षी है इतिहास हमीं पहले जागे हैं।
जागृत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं॥
शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे हैं?
कायरता से कहाँ प्राण हमने त्यागे हैं?

हैं हमीं प्रकम्पित कर चुके सुरपति तक का भी हृदय।
फिर एक बार हे विश्व तुम गाओ भारत की विजय॥

कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा?
दलित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा?
[illegible]
[illegible]

[illegible]
फिर [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
फिर [illegible]

पाठ-सहायक

शौर्य=शूरता, वीरता। साखी=गवाही, सबूत देनेवाला। सुरपति=इन्द्र। अवनि=पृथ्वी। यूनानी तो हारे—यह गीत चन्द्रगुप्त मौर्य के सैनिकों ने उस समय गाया था जिस समय उन्होंने यूनानी राजा सिल्यूकस को हरा दिया था।

अभ्यास

१. शब्दार्थ बताओ—अभय, जागृति, कायरता, दलित, शरणागत, प्रकम्पित।

२. अर्थ लिखो और अपने वाक्यों में प्रयोग करो—जग में गूँज है। भारत की विजय। कायरता से प्राण त्यागना। दलित करना। शौर्य। सकुचाता। गम्भीर।

३. भारतवासियों के विशेष गुणों का वर्णन करो।

४. शरणागत के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

५. क्रोध के समय मनुष्य की क्या दशा हो जाती है।

६. निम्नलिखित शब्दों को व्याकरण से बतलाओ:—शौर्य, वीर्य, गुण, हम, भारत, सुरपति, बतलाओ और अवनि।

७. इस कविता को याद करके सुनाओ।